

## पाठ 21 अध्याय 16, 17, और 18 जारी

हमारे पिछले पाठ में हमने गिनती में पवित्रशास्त्र के 3-अध्याय खंड की शुरुआत की थी जो सभी को यह स्पष्ट करने का प्रयास करता है कि याजकत्व इस्राएल के यहोवा के साथ रिश्ते के लिए केंद्रीय है। और पवित्रता का पदानुक्रम जिसे परमेश्वर ने स्थापित किया था, पहले लेवी को इस्राएल से अलग करके उनके सेवकों के रूप में विशेष पवित्रता के लिए, और दूसरे लेवियों को स्वयं लेवियों और याजकों नामक 2 समूहों में विभाजित किया गया था, अपरिवर्तनीय था। प्रभु जो स्थापित करता है, मनुष्य उसे नहीं बदलता। प्रभु जो तय करता है कि उसका पुजारी कौन होगा, मनुष्य उसे संशोधित नहीं कर सकता और निश्चित रूप से समाप्त नहीं कर सकता।

गिनती 16 में शुरू हुई कहानी में हम पाते हैं कि इस्राएल के लोगों में सामान्य तौर पर अशांति और बेचैनी की स्थिति है। वे 12 मण्डली में से 10 की विश्वासघाती और कायरतापूर्ण रिपोर्ट और उसके बाद इस्राएल के नेतृत्व द्वारा कनान, जो कि उनका वादा किया हुआ देश है, पर विजय प्राप्त करने से बचने के निर्णय से हतोत्साहित हैं।

लोग भावनात्मक रूप से अस्थिर थे और बदलाव चाहते थे, उन्हें लगा कि नया नेतृत्व ही शुरुआत करने के लिए एक अच्छा विकल्प है। पुरुषों के लिए कभी-कभी नेताओं के एक समूह को हटाने और उनकी जगह दूसरे को लाने की कोशिश करना एक बात है। पुरुषों के लिए परमेश्वर की इच्छा को हड़पने की कोशिश करना बिल्कुल दूसरी बात है, जैसा कि इस विद्रोह के मामले में हुआ।

कोरह, एक लेवी जो इस बात से असंतुष्ट है कि हारून की वंशावली (एक पारिवारिक वंशावली जो लेवी के गोत्र से भी है, लेकिन उसके अपने कुल से अलग कुल से है) एकमात्र पारिवारिक वंशावली है जिसे अत्यधिक प्रतिष्ठित पुजारी के रूप में नियुक्त किया जा सकता है। भले ही लेवी का पूरा गोत्र विशेष पवित्रता और YHWH की सेवा के लिए इस्राएल से अलग है, पुजारियों को अन्य लेवियों की तुलना में पवित्रता की एक बड़ी डिग्री दी गई है जिसमें उच्च पुजारी (वर्तमान में हारून) को किसी भी इब्रानी (मूसा को छोड़कर) के लिए संभव पवित्रता की उच्चतम डिग्री दी गई है। कोरह ईर्ष्यालु है और इस पर विवाद करता है, वह हारून की स्थिति को चुनौती देता है और इसे अपने लिए चाहता है और चाहता है कि पुजारी को अन्य लेवी कुलों के बीच समान रूप से वितरित किया जाए। यह विशिष्ट आदिवासी समाज का व्यवहार था।

लेकिन लेवी गोत्र के अधिकांश लोग (जो हारून के गोत्र के नहीं थे) ही एकमात्र ऐसे लोग नहीं थे, जिनके पास गंभीर मतभेद थे, हमने पाया कि रूबेन गोत्र के 2 गोत्र के नेता मूसा को उसके काम के लिए चुनौती दे रहे थे, क्योंकि वह पूरे इस्राएल पर अंतिम नेता और अधिकार था। रूबेन गोत्र के संस्थापक (रूबेन) की मृत्यु कम से कम 300 साल पहले हो चुकी थी, इसलिए गिनती 16 उसके वंशजों का उल्लेख कर रही है। याकूब के ज्येष्ठ पुत्र रूबेन को उम्मीद थी कि वह (और इसलिए उसका भावी कबीला) इस्राएल के 12 कबीलों में प्रमुख कबीला बन जाएगा, क्योंकि उसे पूरी उम्मीद थी कि याकूब से जन्मे पहले बेटे के रूप में अपने जन्मसिद्ध अधिकार के माध्यम से इस्राएल पर नेतृत्व की भूमिका से सम्मानित किया गया था।

और इस प्रकार अपने पिता से ज्येष्ठ पुत्र का पारंपरिक आशीर्वाद प्राप्त करना। लेकिन याकूब ने रूबेन को अस्वीकार कर दिया और उसे ज्येष्ठ पुत्र का आशीर्वाद देने से इनकार कर दिया, और इसलिए, ज्येष्ठ पुत्र का अधिकार, यह अपमानजनक कार्य उस क्षण से रूबेन के परिवार (और अंततः गोत्र) को नकारात्मक तरीके से प्रभावित करेगा। इसके बजाय याकूब ने ज्येष्ठ पुत्र के आशीर्वाद के प्रावधानों को विभाजित किया जो रूबेन को मिलना चाहिए था, इस्राएल राष्ट्र के नेतृत्व का अधिकार यहूदा को दे दिया, और यूसुफ को धन का सबसे बड़ा हिस्सा विरासत में देने का अधिकार दिया। रूबेन के वंशजों ने (इतने समय के बाद भी) न तो इस अपमान को स्वीकार किया और न ही नेतृत्व की स्थिति के नुकसान को भुलाया जो उन्हें लगा कि हमेशा उनका होना चाहिए था। नतीजतन, इस समय हम रूबेन के 2 आदिवासी नेताओं (दतन और अवीराम) को इस्राएल के नेता के रूप में मूसा की स्थिति को चुनौती देते हुए पाते हैं, वे नौकरी चाहते थे। कोरह, दातान और अबीराम के साथ अन्य इस्राएली गोत्रों के 250 नेता भी थे जो मूसा और हारून को उनके परमेश्वर स्थापित पदों से हटाना चाहते थे, और स्वयं इस्राएल राष्ट्र का नेतृत्व अपने हाथ में लेना चाहते थे।

मूसा का समाधान यह था कि परमेश्वर को सार्वजनिक प्रदर्शन के माध्यम से इसे संभालने दिया जाए: इन विद्रोही नेताओं में से प्रत्येक को एक आग के बर्तन (जिसे सेंसर भी कहा जाता है) पर गर्म कोयले डालने थे, उसके ऊपर धूपबत्ती रखनी थी, और धूम्रपान मिश्रण को बैठक के तम्बू के प्रवेश द्वार पर ले जाना था। फिर परमेश्वर किसी अनिर्धारित तरीके से इस मामले को सुलझाएगा कि वे विशेषाधिकार प्राप्त कुछ लोग (पुजारी) कौन होंगे जिन्हें पवित्र तम्बू के आंतरिक कक्षों तक पहुँच प्राप्त होगी, और जिनका इस्राएल पर नियंत्रण होगा।

आइए हम गिनती 16:16 से अध्याय के अंत तक पुनः पढ़ें ताकि पिछले सप्ताह जो हमने पढ़ा था वह हमें अच्छी तरह याद आ जाए।

### गिनती 16:16–35 को दोबारा पढ़ें

कोरह और 250 नेता और जाहिर तौर पर कुछ अन्य लोग (जिन्हें पूरा समुदाय कहा जाता है, जो विद्रोहियों का पक्ष लेते हैं) निर्देशानुसार कार्य करते हैं और अपने अग्निपात्रों के साथ बैठक के तम्बू के प्रवेश द्वार पर उपस्थित होते हैं। बिना किसी संदेह के, यह उस द्वार पर नहीं था जो पवित्र स्थान तम्बू का प्रवेश द्वार था, बल्कि तम्बू के प्रांगण में प्रवेश द्वार था, जहाँ सभी लोग एकत्रित हुए थे।

फिर परमेश्वर की उपस्थिति (कावोद, महिमा) सबके सामने प्रकट हुई और प्रभु ने मूसा और हारून से बात की और उन्हें एक तरफ खड़े होने के लिए कहा, कि वह उन सभी को नष्ट करने जा रहा है जो इसमें शामिल हैं। अब यह होना चाहिए कि केवल मूसा और हारून ने यहोवा की बात सुनी हो, अन्यथा निश्चित रूप से ये सभी लोग पीले पड़ गए होते और अपनी जान बचाने के लिए भाग गए होते। और जैसा कि अतीत में हुआ था, इस्राएल का मध्यस्थ अपने चेहरे पर गिर जाता है और उन्हीं लोगों के लिए दया की भीख माँगता है जिनका लक्ष्य तख्तापलट करके मूसा और हारून को खत्म करना था। इसके अलावा, पद 22 में, मूसा पूछता है, “क्या आप एक व्यक्ति के पाप करने के कारण पूरे समुदाय पर अपना क्रोध भेजेंगे?” जाहिर है कि यह एक आदमी कोरह था, जो इस पूरी गड़बड़ी का सूत्रधार था। कम से कम मूसा के विचार में यह कोरह ही था जिसने जाहिर तौर पर दातान को उकसाया, और अबीराम ने फिर कोरह को दूसरों को भड़काने में मदद की। लेकिन समझिए कि यहाँ क्या चर्चा हो रही है विषय सामूहिक दंड है।

जाहिर है कि हर व्यक्ति दूसरे की तरह ही दोषी नहीं है, न ही उन सभी के बीच भागीदारी का स्तर सार्वभौमिक रूप से समान है। मूसा सामूहिक दंड के इस सिद्धांत को स्वीकार भी कर रहा है और सवाल भी उठा रहा है, और क्या इस मामले में परमेश्वर उस सिद्धांत पर काम करने के लिए गंभीर है।

अब यह सब थोड़ा भ्रमित करने वाला हो सकता है क्योंकि बाइबिल बार-बार “समुदाय” शब्द का उपयोग करती रहती है लेकिन वास्तव में यह हर बार लोगों के कुछ अलग समूह को संदर्भित करता है। यह बिल्कुल वैसा ही है जैसे हम किसी समूह की ओर इशारा करके “ये लोग” कहते हैं, और फिर उसी समूह के एक हिस्से की ओर इशारा करके “ये लोग” कहते हैं। इब्रानी शब्द **हा—एदाह**, जिसका यहाँ समुदाय शब्द में अनुवाद किया जा रहा है, एक व्यापक और लचीला

शब्द है जिसका उपयोग लोगों के किसी भी समूह को संदर्भित करने के लिए किया जाता है जब वे एक समान जाति के होते हैं, या एक समान कार्य करते हैं, या एक समान निर्णय पर सहमत होते हैं। इसलिए विद्रोहियों के साथ सभा के तम्बू में जो समुदाय दिखाई दिया, वह विद्रोही नेताओं का पक्ष लेने वाला समुदाय था। जब प्रभु की उपस्थिति पूरे समुदाय (इब्रानी में कोल हा—एदाह) के सामने प्रकट हुई, तो इसका मतलब था कि इस्राएल राष्ट्र में हर कोई उसकी उपस्थिति देख सकता था। जब परमेश्वर ने मूसा से कहा कि वह इस समुदाय से दूर रहे क्योंकि वह उन्हें नष्ट करने जा रहा था, तो यह उन विद्रोहियों और उनके समर्थकों को संदर्भित कर रहा था। जब मूसा ने परमेश्वर से पूछा कि क्या वह एक व्यक्ति के पाप के कारण कोल एदाह पूरे समुदाय को नष्ट कर देगा, तो यह फिर से पूरे इस्राएल को संदर्भित कर रहा था।

जब हम आयत 26 पर आते हैं और मूसा समुदाय को दुष्ट लोगों के तम्बूओं से दूर रहने के लिए कहता है, तो इस मामले में समुदाय का संदर्भ उन सभी लोगों से था जो विद्रोहियों के साथ नहीं खड़े थे। और इस बात पर तब जोर दिया जाता है जब मूसा निर्दोष लोगों से कहता है कि वे विद्रोहियों से खुद को अलग कर लें, उनसे जुड़ी किसी भी चीज़ को न छुएँ, कहीं ऐसा न हो कि जब दोषियों को सज़ा मिले तो वे भी नुकसान का कारण बन जाएँ।

हम पूरे बाइबिल, पुराने और नए नियम में अलगाव के इस सिद्धांत को पाते हैं। विश्वासियों को गैर—विश्वासियों से अलग किया जाना चाहिए। शुद्ध को अशुद्ध से। पापियों को बचाए गए लोगों से। भेड़ों को बकरियों से। लूट को सदोम के मूर्तिपूजकों से अलग किया जाना था अन्यथा वह अनुप्रासंगिक क्षति होगी। चाल यह है कि यह समझना है कि कैसे और कितना परमेश्वर के धर्मी लोगों को अधर्मियों से अलग किया जाना चाहिए। यीशु के दिनों के एसेन ने उस सिद्धांत को एक चरम सीमा तक ले लिया और सदस्यता के कड़े नियमों के साथ अपने स्वयं के अलग—अलग उपनिवेश बनाए, उन्होंने अपना मुख्यालय भी जंगल में स्थापित किया जो आज कुमरान नामक स्थान पर बाकी सभी से बहुत दूर है। वैसे, मसीहा ने इस तरह के अत्यधिक अलगाव को स्वीकार नहीं किया और ऐसा कहा। दूसरी ओर, विश्वासियों के रूप में हमें बाइबिल में सीधे तौर पर कहा गया है कि हत्यारों, चोरों और उन लोगों के साथ संगति न करें जो प्रभु के नहीं हैं। हमें इस दुनिया में रहना है लेकिन इस दुनिया का नहीं।

ध्यान दें कि इस प्रकरण में हम एक साथ कई चीजें होते हुए पाते हैं। सबसे पहले, यह कि केवल कोरह और 250 नेता और उनके साथी ही आग के बर्तनों और धूपबत्ती से जुड़े इस प्रदर्शन परीक्षण के लिए सभा के तम्बू में आए थे। याद करें कि जब मूसा ने दातन और अबीराम

को बुलाया तो उन्होंने इस कार्यक्रम में आने से इनकार कर दिया। और चूँकि वे मूल रूप से कह रहे थे कि यह शो उन्हें चलाना चाहिए न कि मूसा को, इसलिए यह कल्पना करना आसान है कि जब मूसा ने उन्हें बुलाया तो उन्होंने जवाब देने से इनकार क्यों किया: वे यह संदेश दे रहे थे कि वे मूसा के अधिकार को स्वीकार नहीं करते और न ही किसी और को करना चाहिए।

इसलिए यदि आप मोहम्मद को पहाड़ पर नहीं ला सकते तो आप पहाड़ को मोहम्मद के पास ले जाइए, पद 25 में कहा गया है कि “मूसा उठे” और इस्राएल के बुजुर्गों (बुजुर्गों का मतलब इस्राएल के लोगों के आधिकारिक प्रतिनिधि हैं) के साथ मूसा के साथ दातन और अबीराम के तंबू में गए, पूर्वी प्रवेश द्वार से तम्बू के प्रांगण में चले गए और डेरे के दक्षिणी हिस्से में पहुँचे जहाँ दातन और अबीराम के गोत्र ने डेरा डाला था। यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि लेवी के गोत्र ने रूबेन के गोत्र के निकट डेरा डाला था, इस प्रकार उन्होंने एक प्रकार का पड़ोस बनाया।

जब मूसा दातन और अबीराम के तंबू में दिखाई दिया तो वे उससे भिड़ने के लिए बाहर आए, मूसा ने उन पर फैसला सुनाया। उसने कहा, ‘यदि तुम एक सामान्य जीवन जीते हो, और फिर किसी भी मनुष्य की तरह मर जाते हो, तो मूसा अपनी मर्जी से काम कर रहा था और यह यहोवा नहीं था जो उसे यह सब करने का आदेश दे रहा था। दूसरे शब्दों में, यदि परमेश्वर उनके साथ कुछ असाधारण नहीं करता है, तो वास्तव में वे हमेशा सही रहे होंगे; मूसा इस्राएल का वैध नेता नहीं था।

दूसरी ओर, मूसा कहता है कि यदि भूमि फट जाए और तुम्हें निगल जाए तो तुम गलत थे और मृत्यु तुम्हारी सजा है। खैर, मूसा ने जैसे ही अंतिम शब्द बोलना समाप्त किया, अचानक और हिंसक रूप से भूमि दातन और अबीराम के तंबूओं के नीचे फट गई और उनके आस-पास के लोग जो उनके पक्ष में थे, और वे सभी गहरी खाई में गिर गए और नष्ट हो गए। मृतकों में कोरह का परिवार और उसके गोत्र के सभी लोग शामिल थे जो उसके पक्ष में थे, महिलाएँ, बच्चे, हर कोई। यहाँ तक कि उनके तंबू और उनकी भौतिक संपत्ति भी धरती में हुए विशाल विभाजन में गिर गई। दूसरे शब्दों में, इन विद्रोहियों के जीवन का हर अंतिम निशान, हर सबूत कि वे कभी अस्तित्व में थे, परमेश्वर के क्रोध के एक पल में उनके हाथों से मिटा दिया गया।

और सभी इस्राएली जिन्होंने यह सब देखा (संभवतः निर्दोष लोग) घबराकर भाग गए, क्योंकि उन्हें डर था कि वे इस विशाल दरार में गिर जाएँगे।

अध्याय की अंतिम आयत फिर स्थान बदलती है; हमें डेरे के दक्षिणी भाग से वापस ले जाया जाता है जहाँ मूसा चला था, पूर्व की ओर और सभा के तम्बू के प्रवेश द्वार पर। वहाँ कोरह

और 250 पुरुष जो परमेश्वर की स्थापित पदानुक्रम को चुनौती देने के लिए अपने अनधिकृत अग्निपात्रों के साथ आए थे जिन लोगों के पास परमेश्वर के निकट आने के लिए कोई व्यवसाय या पर्याप्त स्थिति नहीं थी, उन्हें परमेश्वर की स्वयं की उपस्थिति से आने वाली आग से जिंदा जला दिया गया। अगर यह नरक, आग की झील और अधर्मियों की अंतिम सजा का एक अच्छा चित्र नहीं है, तो मुझे नहीं पता कि क्या है।

विद्रोहियों, उनके परिवारों और उनके पास जो कुछ भी था, उसे इस्राएल से निकाल दिया गया क्योंकि वे परमेश्वर की दृष्टि में अशुद्ध हो गए थे। याद कीजिए कि कुछ साल पहले कुछ अन्य लोगों ने भी परमेश्वर को "अजीब आग" चढ़ाई थी और उन्हें भी यही हश्न सहना पड़ा हारून के बेटे नादाब और अबीहू। लेकिन नादाब और अबीहू के पास उचित दर्जा था और उन्हें परमेश्वर को धूप चढ़ाने का अधिकार था, इन विद्रोही लोगों को, जिन्हें अभी-अभी नष्ट किया गया था, ऐसा अधिकार नहीं था। समस्या यह थी कि नादाब और अबीहू ने होमबलि की वेदी के अलावा किसी और चीज़ से कोयले चढ़ाए, जो उन कोयले को लाने के लिए एकमात्र अनुमेय स्थान था। इसलिए कोरह, दातान, अवीराम और 250 लोगों द्वारा परमेश्वर के विरुद्ध किया गया पाप नादाब और अबीहू द्वारा किए गए पाप से भी अधिक बुरा था। नादाब और अबीहू के मामले में केवल उन्हें ही ईश्वरीय क्रोध का सामना करना पड़ा क्योंकि उन्होंने केवल अपने पक्ष में कार्य किया था, कोरह, दातान और अवीराम के मामले में, उनके पूरे निकटतम परिवार के साथ-साथ जो कोई भी उनके कार्यों से सहमत था, उसे नष्ट कर दिया गया।

आगे लिखा है कि सभी विद्रोही अधोलोक में चले गए। अधोलोक मृतकों का स्थान, कब्र था। इसे ज़मीन की सतह के नीचे स्थित एक जगह के रूप में देखा जाता था। क्या उस युग में शीओल को उसी तरह से देखा जाता था जैसे हम आज देखते हैं, एक ऐसी जगह के रूप में जहाँ शैतान और उसके राक्षसी गुर्गे रहते हैं? नरक या अधोलोक के रूप में, आग और खोई हुई आत्माओं के लिए अनंत पीड़ा का स्थान?

वास्तव में वे यह बिल्कुल भी स्पष्ट नहीं थे कि शीओल क्या है, सिवाय इसके कि यह कब्र है और इसमें किसी तरह का जीवन पश्चात अस्तित्व में है। वे यह स्पष्ट नहीं थे कि मृत्यु के बाद, सामान्य विघटन के अलावा, शीओल में भौतिक शरीर के साथ क्या होता है। वे इस बात पर स्पष्ट नहीं थे कि अस्तित्व की सांस के साथ क्या हुआ जिसे हम आमतौर पर आत्मा कहते हैं, जब वे मर जाते हैं। हम तोरह में पाएँगे कि इस्राएली इस बात को लेकर बहुत चिंतित थे कि मृत्यु के बाद उनके साथ क्या हुआ क्योंकि शीओल को **सभी** की नियति के रूप में देखा जाता था, न कि

केवल दुष्टों के लिए। लेकिन शीओल में एक बार होने वाली सबसे बुरी चीजों में से एक यह थी कि कीड़े किसी के शरीर को खा सकते थे। और अक्सर ऐसा माना जाता था कि जो लोग अधर्मी अवस्था में मर गए थे, उनके लिए यह एक दैवीय दंड था।

मरने के बाद उनके शरीर का क्या हुआ, इस बारे में इतनी चिंता क्यों? सबसे पहले, उन्हें स्वर्ग या परमेश्वर के साथ रहने की कोई अवधारणा नहीं थी। याद रखें कि वे मिश्रियों की तरह सोचते थे; और मिश्रियों ने अपनी पूरी जिंदगी अपनी मौत की तैयारी में बिता दी। उनका परलोक भौतिक शरीर के संरक्षण पर आधारित था, इसलिए वे मरने के बाद शव को संरक्षित करने और अपने शव को सुरक्षित रखने की इच्छा रखते थे। इसलिए हालाँकि इस्राएलियों ने मिश्रियों की तरह मृत्यु पंथ या शरीर के संरक्षण का अभ्यास नहीं किया, लेकिन उनके मन में यह दुविधा थी कि उनकी मृत्यु के बाद उनके साथ क्या हुआ और इसके बारे में क्या करना है और इसके लिए कैसे तैयारी करनी है। इस कहानी में व्यक्त की गई सज़ा का मुख्य बिंदु (दरार में गिरना और अधोलोक में जाना) यह था कि ये लोग परमेश्वर के हाथों मारे गए, या उस बिंदु को थोड़ा और स्पष्ट करने के लिए, वे अपने व्यवहार के परिणामस्वरूप समय से पहले मर गए। और किसी के सामान्य जीवनकाल के समाप्त होने से पहले मरना एक भयानक बात मानी जाती थी और उससे बहुत डर लगता था।

पिछले सप्ताह मैंने आपको बताया था कि हमें इससे जो मुख्य सबक लेना चाहिए, वह यह है कि मुक्ति को न केवल पहले ही अस्वीकार किया जा सकता है, इसे प्राप्त करने वाले की इच्छा पर वापस दिया जा सकता है। जिस तरह कोरह, दातान, अबीराम और उनके सैकड़ों या हज़ारों अनुयायियों ने मिश्र में अपने पुराने जीवन को चुनने का फैसला किया था, बजाय इसके कि वे मिश्र से मुक्ति में रहें, जो उन्हें पहले से ही ईश्वर से मिली थी, उसी तरह हम आधुनिक विश्वासियों के साथ भी है। **चुनने** पर जोर दें क्योंकि इन सभी विद्रोहियों ने मिश्र छोड़ते समय इस्राएल के साथ जाने का फैसला किया था, उन्हें निश्चित रूप से जाने के लिए मजबूर नहीं किया गया था और इन विद्रोहियों ने अपने लिए नए नेता बनाने का फैसला किया जो उन्हें वापस मिश्र ले जाएँगे। उन्होंने अपनी मुक्ति को त्यागने का फैसला किया। यह हमारे लिए भी उसी तरह काम करता है। कोई भी हमसे हमारी मुक्ति नहीं छीन सकता है, और ऐसी कोई जगह नहीं है जहाँ हम जा सके जहाँ यह **अमान्य** हो जाए। लेकिन जैसे हम अपनी मुक्ति को **स्वीकार** करना चुनते हैं, वैसे ही हम **इसे छोड़ देना भी** चुन सकते हैं। और, दुख की बात यह है कि अनगिनत लोगों ने पहले ही मिश्र वापस जाने का चुनाव कर लिया है, तथा कई और लोग भी ऐसा ही चुनेंगे।

लेकिन इससे भी ज़्यादा दुखद बात यह है कि जब हम अपने उद्धार को अस्वीकार करते हैं या वापस कर देते हैं, तो हमारे साथ क्या होता है; और यह गिनती 16 में पूरे जीवंत रंग में प्रदर्शित होता है। इसका परिणाम यह होता है कि हम पूरी तरह से नष्ट हो जाते हैं; कोई उम्मीद नहीं है, कोई भविष्य नहीं है। हमने जो कुछ भी बनाने के लिए जीवन भर काम किया था, वह सब कुछ खत्म हो जाता है। और शायद इससे भी बदतर यह है कि (विशेष रूप से हमारे परिवारों और मंडलियों के पुरुष नेताओं के रूप में), हमारे पास दूसरों को उनके उद्धार से दूर ले जाने की क्षमता है। हम दूसरों के निर्णयों को प्रभावित कर सकते हैं। और, वे हमारे विद्रोह के कारण हमारे जैसा ही भाग्य भुगत सकते हैं। एक गंभीर विचार, है न?

### यूहन्ना 15 को पढ़िए:

यूहन्ना 15:1 "मैं सच्ची दाखलता हूँ और मेरा पिता माली है। 2 हर शाखा जो मुझ में है और नहीं फलती, उसे वह काट डालता है, और प्रत्येक डाली जो फलती है उसे वह छांटता है कि और फले, 3 अभी जो वचन मैं ने तुम से कहा है, उसके कारण तुम छांटे गए हो। 4 तुम मेरे साथ जुड़े रहो, जैसा मैं तुम्हारे साथ रहूँगा क्योंकि जैसे डाली बेल के बिना अपने आप फल नहीं दे सकती, वैसे ही तुम भी मुझसे अलग होकर फल नहीं दे सकते। 5 मैं बेल हूँ और तुम डालियाँ हो। जो मेरे साथ जुड़े रहते हैं और मैं उनके साथ, वे बहुत फल लाते हैं। क्योंकि मेरे बिना तुम कुछ भी नहीं कर सकते। 6 यदि कोई मेरे साथ जुड़ा न रहे, तो वह एक डाली की तरह फेंक दिया जाता है और सूख जाता है। ऐसी डालियाँ इकट्टी की जाती हैं और आग में फेंक दी जाती हैं, जहाँ वे जल जाती हैं।

हर शाखा (विश्वासी) जो यीशु का हिस्सा है लेकिन फल नहीं देती है, उसे काट दिया जाता है। और उन कटी हुई शाखाओं का क्या होता है जो एक समय में मसीहा का हिस्सा थीं? उन्हें फेंक दिया जाता है, सुखाया जाता है, और फिर आग में फेंक दिया जाता है जहाँ वे जल जाती हैं। यह बिलकुल स्पष्ट है।

लेकिन मैं आपको एक और आधारभूत ईश्वर-सिद्धांत भी दिखाना चाहता हूँ जो यहाँ प्रदर्शित किया गया है और वह यह है। हर किसी को ईश्वर के पास आने की अनुमति नहीं है। वास्तव में केवल उद्धार पाए हुए लोग ही प्रभु के निकट आ सकते हैं। लेकिन इससे भी अधिक, केवल उद्धार पाए हुए लोग ही जो किसी बड़े स्तर पर पवित्र घोषित किए गए हैं, वे ही प्रभु के निकट आ सकते हैं। मैंने कई अवसरों पर संत पौलुस, यूहन्ना और अन्य लोगों का उल्लेख किया है जो विश्वासियों को प्रभु के "पुजारी" के रूप में संदर्भित करते हैं। और मुझे लगता है कि यह कुछ हद तक

आलंकारिक और शाब्दिक दोनों है। हम यहाँ गिनती में पाते हैं कि यहोवा ने घोषणा की है कि केवल पुजारी ही उसकी उपस्थिति के निकट आ सकते हैं। और फिर भी यह एक हद तक और स्थिति पर आधारित है। नियमित पुजारी उसके करीब आ सकते हैं, लेकिन केवल इतने ही करीब, केवल उच्च पुजारी को ही उसकी महिमा के सबसे करीब आने की अनुमति है, लेकिन वह भी प्रति वर्ष केवल 1 दिन तक ही सीमित है, योम किप्पुर। जो लोग परमेश्वर के पास जाने का प्रयास करते हैं, लेकिन जिन्हें परमेश्वर पुजारी नहीं मानता, उन्हें नष्ट कर दिया जाता है, जैसे कोरह और उसके बाकी साथियों को नष्ट किया गया था। क्यों? क्योंकि उन्हें परमेश्वर की उपस्थिति में रहने का अधिकार नहीं था।

उद्धार से प्राप्त अनेक कार्यों में से एक यह है कि यह हमें परमेश्वर तक अधिकृत पहुँच प्रदान करता है। परमेश्वर, यीशुआ यीशु हमारे मसीहा में हमारे विश्वास के माध्यम से, हमें एक ऐसे स्थान पर आने का अधिकार देता है जहाँ किसी भी परिस्थिति में किसी और को आने की अनुमति नहीं है: उसके निकट। इस्राएल में स्थापित गतिशीलता और पदानुक्रम पर ध्यान दें: मूसा एकमात्र मध्यस्थ है। मूसा, मध्यस्थ के माध्यम से जाने के बिना परमेश्वर तक कोई पहुँच नहीं है। जिन लोगों ने मध्यस्थ को बदलने की कोशिश की या परमेश्वर द्वारा नियुक्त मध्यस्थ को दरकिनार करने का दृढ़ निश्चय किया, उन्हें न केवल अस्वीकार कर दिया गया; उन्हें फिर से बहाल करने की कोई उम्मीद नहीं होने के साथ नष्ट कर दिया गया।

ईश्वर तक हमारी एकमात्र संभावित पहुँच यीशु हमारे मध्यस्थ के माध्यम से है। ईश्वर के निकट आने से पहले हमें यीशु के पास आना होगा (नहीं, मैं यह नहीं भूल रहा हूँ कि यीशु ईश्वर हैं, लेकिन यह एक और गूढ़ मामला है)। यह मूसा ही था जिसने ईश्वर के नाम पर मूल पुजारियों का अभिषेक किया था। यह मसीह ही है जिसे हमें पवित्र आत्मा से अभिषेक करना चाहिए, जो ईश्वर के निकट आने के लिए हमारे आधिकारिक प्राधिकरण के रूप में कार्य करता है। लेकिन फिर भी इस बात की एक सीमा है कि हम अपनी वर्तमान स्थिति में उसके कितने निकट जा सकते हैं। क्योंकि भले ही उसने हमें नई और स्वच्छ आत्माएँ दी हैं, लेकिन ये शरीर अभी भी भ्रष्ट सामग्री से बने हैं। हमारे मन में अभी भी दुष्ट प्रवृत्तियाँ हैं। इसलिए हमें एक ऐसे समय के बारे में बताया गया है जब हमें अदूषित सामग्री से बने नए शरीर और नए मन मिलेंगे जो अब पहले के दिनों को याद नहीं रखेंगे, तब हम पिता के और भी करीब पहुँच पाएँगे।

अब मैं आपको यह नहीं बता सकता कि क्या नया नियम के लेखकों ने लेवी पुजारियों की ईश्वर के निकट आने की क्षमता के बीच कोई सीधा संबंध देखा है, और फिर यीशु के आगमन के

साथ आम लोगों (इब्रानी या गैर-यहूदी) के लिए मसीह के माध्यम से परमेश्वर के निकट आने की नई क्षमता और इसलिए इस समझ से उन्होंने एक सादृश्य बनाया कि हम यीशु के शिष्य उस संबंध में "पुजारियों की तरह" हैं। या यह हो सकता है कि परमेश्वर वास्तव में और शाब्दिक रूप से हमें अपने "नए और परिवर्तित पुजारी के रूप में देखता है। यह सब चर्चा के लिए खुला है।

लेकिन मैं आपको यह बता सकता हूँ कि किसी व्यक्ति को प्रभु के निकट आने की अनुमति कैसे दी जाती है, इसका स्वरूप बहुत समय पहले ही निर्धारित कर दिया गया था, और उस स्वरूप का विवरण यहाँ, तोरह में समझाया गया है।

**आइये अब हम गिनती 17 की ओर बढ़ें।**

**गिनती 17: 1-15 पढ़ें**

जले हुए मानव अवशेषों के ढेर के नीचे 200 से ज्यादा तांबे के अग्निपात्र पड़े थे जो उन विद्रोहियों के थे जिन्होंने परमेश्वर की इस शर्त की अवहेलना की थी कि सिर्फ पुजारी ही उन्हें धूप चढ़ा सकते हैं। लेकिन हमारे सामने एक समस्या है, जिस तरह पवित्र स्थान से बाहर निकाले जाने पर पवित्र वस्तुएँ अपवित्र हो सकती हैं, उसी तरह सामान्य वस्तुएँ जो पवित्र उद्देश्यों के लिए नहीं थीं, यहोवा को अर्पित करके पवित्रता को अनुबंधित कर सकती हैं। यह बिल्कुल साफ और अशुद्ध के सिद्धांतों की तरह है जिसके अनुसार अशुद्धता एक संक्रामक वायरस की तरह एक चीज़ या व्यक्ति से दूसरे में फैल सकती है।

इसलिए प्रभु मूसा को आदेश देते हैं कि वह एलीआजर याजक को निर्देश दे कि वह उन सभी जले हुए शवों को छानने और उन पिघली हुई आग के बर्तनों को निकालने का अप्रिय कार्य करे जो परमेश्वर की उपस्थिति में उसे अर्पित किए जाने के कारण पवित्र हो गए थे। पद 2 में ध्यान दें कि उन विद्रोहियों के आग के बर्तनों में इस्तेमाल किए गए कोयले को उस क्षेत्र से हटा दिया जाना था (वह क्षेत्र तम्बू का प्रांगण था); ऐसा इसलिए था क्योंकि कोयले को होमबलि की बड़ी वेदी से नहीं लिया गया था (जो कि प्रभु को आग से चढ़ाए जाने वाले प्रसाद के लिए एक आवश्यकता थी)। ये सामान्य कोयले थे जिन्हें प्रत्येक विद्रोही अपने शिविरों की कैम्पफायर से अपने साथ लाया था। इसलिए इन कोयले को पवित्र क्षेत्र से हटा दिया जाना था और उनका निपटान किया जाना था।

लेकिन अग्निपात्रों में पवित्रता की मात्रा कम हो गई थी, जिसके लिए उन्हें अधिकृत नहीं किया गया था, उन्हें दूसरे तरीके से निपटाया जाना था। समाधान यह था कि उन्हें वेदी की अग्नि

टोकरी के ढक्कन में ठोंक दिया जाए। इससे दो उद्देश्य पूरे हुए 1) यह वेदी के जलते हुए कोयले को रात भर गर्म रखने का व्यावहारिक उद्देश्य पूरा करता था, और 2) यह लोगों को याद दिलाता था कि जब कोई अनधिकृत व्यक्ति पवित्र क्षेत्र में अतिक्रमण करता है तो क्या होता है। इसलिए हम एक और पैटर्न को उभरते हुए देखते हैं: परमेश्वर अक्सर अपने लोगों को आज्ञापालन करने के लिए अनुस्मारक के रूप में अध्यादेश और नियम स्थापित करता है। लोगों को झालर क्यों पहनना था? वे उस घटना का प्रत्यक्ष परिणाम थे जब आदमी ने सब्त पर आग के लिए लकड़ियाँ इकट्ठी कीं, और अंतिम कीमत चुकाई अपने भौतिक और आध्यात्मिक जीवन दोनों को खो दिया। वह आदमी परमेश्वर के नियुक्त समयों में से एक का पालन करने में विफल रहा था, और परमेश्वर ने दूसरों को उसी भाग्य से बचने में मदद करने के लिए एक दृश्य सहायता के रूप में झालर का आदेश दिया।

चूँकि हर इस्राएली को नियमित रूप से अपने बलिदान के साथ तम्बू में आना पड़ता था, इसलिए वे वेदी के ढक्कन को उन विद्रोहियों के अग्निपात्रों से बना हुआ देखते थे, जो परमेश्वर के पुरोहितत्व के बारे में इतना कम सोचने के कारण जल गए थे और याद करते थे कि क्या हुआ था। यह लोगों को याद दिलाए कि क्या होता है जब मात्र मनुष्य यह घोषित करने का साहस करते हैं कि परमेश्वर की घोषणा के अलावा कौन या क्या पवित्र है।

लेकिन क्या आप यह नहीं जानते: हवा में सुलगते शों की बदबू के बावजूद भी इस्राएल के अधिकांश समुदाय को यह समझ में नहीं आया और इसलिए उन्होंने मूसा और हारून के खिलाफ विरोध रैली निकाली। यह बिल्कुल हास्यास्पद होता अगर यह इतना खतरनाक और असम्मानजनक, मूर्खतापूर्ण न होता। वे मूसा और हारून से कहते हैं, "तुमने परमेश्वर के लोगों पर मौत ला दी है।" आश्चर्यजनक। लेकिन जैसा कि मैंने कई मौकों पर प्रदर्शित करने का प्रयास किया है, हमें यह समझना चाहिए कि इस समय इस्राएली लोग अपनी सोच में इब्रानी से ज़्यादा मिस्री थे। पूरा मध्य पूर्व जादूगरों और पुजारियों पर विश्वास करता था जिनका काम अपने देवताओं की सेवा करना कम था बल्कि यह पता लगाना था कि अपने उद्देश्यों के लिए उन देवताओं को कैसे हेरफेर किया जाए। मिस्र में भी यही स्थिति थी जहाँ यह माना जाता था कि एक अच्छा पुजारी या जादूगर किसी एक देवता या दूसरे देवता को अपनी आज्ञा के अनुसार काम करने के लिए मजबूर कर सकता है। और उस विचार ने उस युग में परमेश्वर के बारे में इब्रानी सोच का आधार भी बनाया। इसलिए भले ही लोगों को अच्छी तरह से पता था कि मूसा और हारून ने व्यक्तिगत रूप से तम्बू के द्वार पर उन 250 प्रमुख लोगों को आग नहीं लगाई थी, न ही उन्होंने खुद धरती में एक बड़ा विभाजन किया था जिससे वे सभी लोग और उनके परिवार नष्ट हो गए थे, फिर भी वे मानते थे

कि मूसा और हारून ने उनके लिए ऐसा करने के लिए परमेश्वर को बहकाया था। आप जानते हैं, यह एक तरह से स्वर्गीय हिटमैन को काम पर रखने जैसा है। और दुख की बात है कि एक और सबक जरूरी था।

एक बार फिर लोगों ने विद्रोह किया, और एक बार फिर परमेश्वर की उपस्थिति प्रकट हुई और उसने प्रदर्शनकारियों के इस बड़े समूह को मिटा देने के अपने इरादे की घोषणा की। क्या परमेश्वर की योजना पूरे इस्त्राएल को नष्ट करने की थी? नहीं, सिर्फ उन लोगों का एक बड़ा समूह था जो महसूस करते थे कि यहोवा ने तम्बू में 250 लोगों को और उन सैकड़ों या शायद हज़ारों लोगों को नष्ट करके अन्याय किया था, जो धरती में एक बड़ी दरार में गिर गए थे। और एक बार फिर मूसा और हारून अपने चेहरे के बल गिरे (यह प्रार्थना को दर्शाता है) और परमेश्वर से विनती की कि वह उन हज़ारों लोगों को नष्ट न करे जो संभवतः थे। और एक बार फिर परमेश्वर मूसा और हारून से कहता है कि वे इन लोगों से खुद को अलग कर लें क्योंकि ईश्वरीय प्रतिशोध होगा।

ऐसा क्यों है कि परमेश्वर मूसा और हारून से कहता रहता है कि वे उन लोगों के समुदाय से "खुद को अलग कर लें" जिन्हें वह दण्डित करने की योजना बना रहा है? क्या परमेश्वर बुरे लोगों के साथ-साथ अच्छे लोगों को भी मिटा देगा? उत्तर, बिलकुल! क्या यह आपको चौंकाता है या आपको थोड़ा परेशान करता है? क्या आप इस पर विश्वास करते हैं? खैर, मुझे उम्मीद है कि आप ऐसा करेंगे। हमारे पास वचन में इसके कई उदाहरण हैं। यह इस तरह काम करता है अगर धर्मी लोग खुद को दुष्टों से अलग नहीं करते हैं, तो वे भी दुष्टों की तरह ही क्रोध या प्राकृतिक आपदा से प्रभावित होंगे।

उत्पत्ति में, लूत की सोच में गड़बड़ी के बावजूद उसे अभी भी पर्याप्त रूप से धर्मी माना जाता था, इसलिए उसे सदोम के दुष्टों में नहीं गिना जाता था। फिर भी, लूत को दो स्वर्गदूतों द्वारा शहर से बाहर घसीटना पड़ा क्योंकि अगर वह ऐसा नहीं करता तो स्वर्ग से आग द्वारा शहर के नष्ट होने पर वह भी नष्ट हो जाता। लूत की पत्नी ने खुद को शहर से पर्याप्त रूप से अलग नहीं किया (भले ही उसे वह अवसर दिया गया था) और इसलिए जब वह पीछे मुड़कर देखने के लिए रुकी और जो उसने पीछे छोड़ा था उसके लिए तरसने लगी और इस तरह वह नमक के खंभे में बदल गई।

जब प्रभु ने पृथ्वी को एक बड़ी बाढ़ से नष्ट करने का निश्चय किया, तो उसने सबसे पहले नूह को अपने परिवार को बचाने के लिए एक जहाज़ बनाने का निर्देश दिया। बाढ़ पूरी तरह से

अंधाधुंध थी; इसने सभी को मार डाला। केवल वे ही बच निकले जिन्होंने परमेश्वर की आज्ञा मानने और दुष्टों से अलग रहने का चुनाव किया।

मिस्र में वापस आकर परमेश्वर ने पूरे मिस्र में जाकर हर आदमी और हर जानवर के ज्येष्ठ पुत्रों को मार डाला। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता था कि ज्येष्ठ पुत्र इब्रानी, मिस्री, सीरियाई, अरब या कुछ और थे। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता था कि वह अच्छा आदमी था या बुरा आदमी। अगर आप ज्येष्ठ पुत्र थे तो आप मर जाएँगे। सिवाय परमेश्वर ने उन लोगों के लिए एक साधन प्रदान किया जो उस पर इतना भरोसा करते थे कि वे खुद को राष्ट्रीय आपदा से अलग कर सकें। उन्हें अपने घरों की चौखटों पर मेमने का खून लगाना था। और अगर वे ऐसा करते तो खून उनके और दूसरों के बीच एक बाधा (विभाजक रेखा) के रूप में काम करता और इसलिए उन्हें छोड़ दिया जाता।

विश्वासियों के रूप में जब हम इस दुनिया के दुष्ट तरीकों और दुष्ट लोगों से जुड़े रहते हैं, तो हम खुद को गंभीर जोखिम में डालते हैं जब परमेश्वर दुनिया का न्याय करते हैं। मैं स्पष्ट कर दूँ, "जुड़े" से मेरा मतलब है, "पहचान"। इसका मतलब है कि हम उनके तरीकों और उनकी सोच से पहचान करते हैं, हम इससे सहमत हैं। क्या आप एक विश्वासी होने के बावजूद दुनिया के इतने सारे तरीकों से सहमत हो सकते हैं? निश्चित रूप से आप ऐसा कर सकते हैं और हम इसे हर दिन देखते हैं। लेकिन परमेश्वर यहाँ जो समझा रहे हैं वह यह नहीं है कि हमें अलग होकर सभी अन्य समुदायों से अलग ईसाई समुदाय बनाना चाहिए; यह है कि जब भी और हर बार हमें अपने कार्यों से यह प्रदर्शित करना चाहिए कि हम दुनिया के साथ खड़े हैं या हम वचन के साथ खड़े हैं, हमें खुद को अलग करने या दैवीय परिणामों का जोखिम उठाने के लिए तैयार रहना चाहिए। और अगर आपने ध्यान नहीं दिया है, तो ऐसा करना कठिन होता जा रहा है। हम जितने अधिक आज्ञाकारी होते हैं, उतना ही अधिक हमें रूढ़िवादी और कट्टरपंथी करार दिया जाता है। हमारा मजाक उड़ाया जाता है और कहा जाता है कि हम सिर्फ पिछड़े और अज्ञानी हैं। लेकिन हाल ही में हमें खतरनाक माना जाने लगा है, यहाँ तक कि अमेरिका में भी। हम पर्याप्त रूप से सहनशील नहीं हैं। अगर हम गर्भपात और समलैंगिकता के खिलाफ बोलते हैं, तो हम नफरत से भर जाते हैं। अगर हम इस बात से सहमत नहीं हैं कि इस्त्राएल अपनी विरासत फिलिस्तीनियों को दे, तो हम यहूदी पागल हैं जो दुनिया को खतरे में डालते हैं शांति।

जब परमेश्वर आपको अलग रहने के लिए कहता है तो क्या आप प्रतिक्रिया देंगे? या आप बहुसंख्यकों के सभी परिचित और आरामदायक तरीकों से पहचाने जाते रहेंगे? मैं आपसे विनती

करता हूँ कि आप उन चीज़ों से किसी भी तरह की पहचान से दूर रहें जिन्हें परमेश्वर दुष्ट कहता है, क्योंकि किसी भी समय न्याय हो सकता है और आप एक निर्दोष दर्शक बन सकते हैं।

अगले सप्ताह, हम देखेंगे कि कोरह, दातान और अबीराम के साथ पहचान रखने वाले लोगों के समुदाय पर न्याय कैसे आता है।